2 अक्टूबर 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 13 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (प्रथम), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : (1) यहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होने वाली गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 13 जुलाई को **'देव-शास्त्र-गुरु : एक अनुशीलन'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में पीयूष जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं नितिन जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के प्रशांत जैन व जिनेश शेठ ने किया।

(2) दिनांक 19 जुलाई को **'सम्यग्दर्शन : एक अनुशीलन'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित नीतेशजी शास्त्री ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अनुभव जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं सत्येन्द्र जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के हर्षित जैन ने किया।

(3) दिनांक 10 अगस्त को **'रक्षाबंधन पर्व : एक अनुशीलन'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित संजीवकुमारजी खड़ैरी ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अमन जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं बाहुबली जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

(4) दिनांक 17 अगस्त को **'वस्तु स्वातंत्र्य'** विषय पर शास्त्री वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में ऋषभ जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं नरेश जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के शुभम हातगिणे व मयंक जैन ने किया।

(5) दिनांक 14 सितम्बर को **'छहढाला : एक अनुशीलन'** विषय पर उपाध्याय वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता विदुषी श्रीमती कमला भारिल्ल ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सपन जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं पारस जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के प्रियम जैन व विशाल उपाध्ये ने किया।

(6) दिनांक 21 सितम्बर को **'पंच भाव : एक अनुशीलन'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित भागचंदजी शास्त्री ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रशांत जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं सौरभ जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अमोल जैन व संदेश जैन ने किया।

(7) दिनांक 28 सितम्बर को **'सात तत्त्व : एक अनुशीलन'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री प्रतापगढ ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में नमन जैन (उपाध्याय वरिष्ठ), प्रतीक जैन (उपाध्याय कनिष्ठ), अमोल महाजन (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं शुभम मोदी (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण अंकित जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के नरेश जैन व गणेश वायकोस ने किया।

आगामी कार्यक्रम...

टोडरमल स्मारक भवन में विधान महोत्सव

कार्तिक माह के अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर गुरुवार दिनांक 30 अक्टूबर से गुरुवार दिनांक 6 नवम्बर तक ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली के विधानाचार्यत्व में सिद्धचक्र मंडल विधान महोत्सव सम्पन्न होने जा रहा है।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि विद्वानों का प्रवचन-कक्षा आदि के माध्यम से लाभ प्राप्त होगा।

सभी साधर्मीजन महोत्सव का लाभ लेने हेतु हार्दिक आमंत्रित हैं। बाहर से पधारने वाले सभी साधर्मीजनों को नि:शुल्क आवास एवं सशुल्क भोजन की व्यवस्था उपलब्ध है। अपने आने की सूचना 25 अक्टूबर तक जयपुर कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

सम्पादकीय –

क्या मुक्ति का मार्ग इतना सहज है ?

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

कर्मकिशोर को बहिन मोहनी की बातें जँच तो गई; परन्तु वह जीवराज से एक बार साक्षात्कार करके उसकी मनःस्थिति स्वयं समझना चाहता था एतदर्थ उसने निम्नोक्त प्रश्न किए।

कर्मकिशोर के प्रश्नों के उत्तर में जीवराज ने कहा – ''कर्मकिशोर आप ही क्या? जितने बाह्यदृष्टि देखने वाले हैं, वे सब भी यही कहते हैं कि मोहनी ने जीवराज को मोहित करके अपने मोहजाल में फँसा लिया और उसकी यह दुर्दशा कर दी और अन्त में मेरी उपेक्षा की, अनादर किया। इतना ही नहीं मुझे घी की मक्खी की भाँति निचोड़ कर फैंक दिया; परन्तु उनका यह कहना और सोचना सर्वथा असत्य है तथा मोहनी ने जो आपसे कहा, वही बात सही है। मोहनी ने मुझे मोहित नहीं किया, बल्कि मैं ही अपने सत्पथ से भटक कर उस पर मोहित हुआ था। उसमें उसकी कतई कोई गल्ती नहीं है। मोहनी का तो स्वभाव ही सम्मोहन में निमित्त बनना है; परन्तु जो अपनी खोटी होनहार से और अपनी तत्समय की उपादान योग्यता से मोहित होता है, मोहनी मात्र उसी के सम्मोहन में निमित्त बनती है। जिसकी भली होनहार है, वह मोहनी के सुन्दर रूप, आकर्षक व्यक्तित्व और लुभावने हाव-भाव को देखकर भी उसकी ओर आकर्षित नहीं होता। यदि मोहनी का वश चलता होता, वह आकर्षित करने की क्षमतावान होती तो समय-समय पर अच्छे-अच्छे ऋषिमुनि, व्रती-ब्रह्मचारी भी उससे नहीं बच पाते? सेठ सुदर्शन को रिझाने की क्या पूर्वभवों में मोहनी ने कोई कम कोशिश की थी; परन्तु वे विचलित नहीं हुए सो नहीं हुए। अतः मोहनी को दोष देना मुझे बर्दास्त नहीं है। मेरे भ्रष्ट होने में सन्मार्ग से भटकने में शतप्रतिशत मेरी ही भूल है, मोहनी निमित्त मात्र है। और वह अपने पर्यायगत स्वभाव को भी तो नहीं छोड़ सकती। मेरा उससे यह कोई प्रथम परिचय नहीं है। पहले भी इस पर मोहित होता रहा हूँ। अतः अकेले उस पर दोषारोपण करना बिल्कुल व्यर्थ है।''

कर्मकिशोर ने अगले प्रश्न की भूमिका बनाते हुए कहा – ''यह तो आपका कहना सही है कि मोहनी का कोई दोष नहीं है; परन्तु उसकी निमित्तता में जो तुम्हें मानसिक संताप और देहिक दुःख हुआ, उस विकट एवं विषम परिस्थिति में आपकी मनःस्थिति कैसी रही? जब पारिवारिक परेशानियाँ, सामाजिक समस्यायें और केंसर रोग की असह्य शारीरिक वेदना से तुम जूझ रहे थे, तब किस विचारधारा के आलंबन से आप स्वयं को संभाल सके, मन को संतुलित रख पाये? आखिर मोहनी ने तुम्हें मँझधार में तो छोड़ ही दिया था न ! ऐसी स्थिति में सामान्य जन तो बुरी तरह घबरा जाते हैं, होश-हवास खो बैठते हैं, हृदयाघात से उनका प्राणान्त तक हो जाता है, परन्तु आपके माथे पर तो एक सिकुड़न तक दिखाई नहीं दी।

मुझसे आपकी वह दुःखद स्थिति छिपी हुई नहीं है। मैं उन सब हालातों का प्रत्यक्षदर्शी रहा हूँ। जब तुम रोग शैया पर पड़े मरणासन्न स्थिति में थे तब मेरी बेटी असाता तुम्हारे साथ ऐसी आँख मिचौनी कर रही थी कि तुम्हारे परिजन-पुरजन तो तुम्हारे जीवन से निराश हो ही गये थे, डॉक्टरों ने भी भगवान का नाम सुनाने की सलाह दे दी थी; फिर भी तुम्हारे चेहरे पर आते-जाते भावों से तुम्हारे मुखमंडल पर निर्भयता, निशंकता एवं प्रसन्नता भासित हो रही थी। मैं यह जानना चाहता हूँ – इसका क्या रहस्य है?''

कर्मकिशोर ने कहा – ''मुझे आश्चर्य इस बात का है कि – तुम अत्यन्त पीड़ाप्रद रोग से घिरे थे। तुम मौत के मुख में भी मृत्युभय से आतंकित नजर नहीं आये। भयंकर वेदना से भी तुम भयभीत नहीं हुए, वह वेदना तुम्हारे अन्तर्मुखी उपयोग को विचलित नहीं कर पायी। समाधिसाधना में तुम पूर्णरूपेण सफल हुए, जो आदर्श बातें अब तक केवल शास्त्रों में पढ़ीं थी, वे तुम्हारे जीवन में प्रत्यक्ष देखकर सुखद आश्चर्य हो रहा है। यह सब कैसे हुआ? मेरी यह जिज्ञासा है। तुम्हारे पास ऐसा कौन सा महामंत्र है, जिसके अवलम्बन से – ऐसी विकट परिस्थितियों में तुम प्रसन्न रहे?

जीवराज ने अपने सप्तभयों से मुक्त रहने का रहस्योद्घाटन करते हुए बताया। ''कर्मकिशोर! तेरी जिज्ञासा की पूर्ति करने के पहले मैं मोहनी और समता को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। उन दोनों का मेरे ऊपर बहुत बड़ा उपकार है।

निःसंदेह मोहनी ममता की मूर्ति है, उसने अपने कर्तव्य के निर्वाह में कोई कोर-कसर नहीं रखी। वह जब तक मेरे साथ रही, पूर्ण समर्पण के साथ मेरी बनकर रही। वह अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण ईमानदार है, उससे मुझे कोई शिकायत नहीं है। मेरी ही शतप्रतिशत भूल रही जो मैं समता जैसी सती सावित्री को छोड़कर

मोहनी पर मूर्छित हो गया। मैं उसे इस कारण धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उसके द्वारा की गई उपेक्षा अस्वाभाविक नहीं है कोई भी मोहनी जैसी नारी उस परिस्थिति में वही करती, जो मोहनी ने किया और उसकी उपेक्षा मेरे लिए वरदान बन गई। यदि मोहनी उपेक्षा नहीं करती तो संभव था कि मैं सन्मार्ग में नहीं आता।

समता को तो मैं भव–भवान्तरों में भी नहीं भूलूँगा; क्योंकि उसने तो मेरा मनुष्यभव ही सार्थक कर दिया है। उसने मेरे द्वारा दिये गये दुःखों को सर्वथा भुलाकर एवं मेरे द्वारा किए दुर्व्यवहार की किंचित् भी परवाह न करके कोई प्रतिक्रिया प्रगट किए बिना मुझे निस्वार्थ भाव से पुनः अपना लिया। यह कोई साधारण नारी का काम नहीं है। वह सचमुच महान है। वह मेरी पत्नी होकर भी अपने सद्गुणों से मेरे लिए श्रद्धेय बन गई है।

समता में एक सुयोग्य पत्नी के सभी गुण विद्यमान हैं। किसी कवि ने सुयोग्य पत्नी के गुणों का बखान करते हुए ठीक ही कहा है –

''भोज्येषु माता सेवासु दासी, कार्येषु मंत्री रतौ च रम्भा।
धर्मेऽनुकूला क्षमयाधरित्री, भार्या च षाड्गुण्यवतीहि दुर्लभा।।

योग्य पत्नी पति को माता की भाँति स्नेह से भोजन कराती है, दासी की भाँति सेवा करती है और मधुरभाषी होती है। कार्यों में मंत्री की भाँति सही सलाह देती है तथा लौकिक सुखों में पत्नी का धर्म निभाती है, धर्मानुकूल रहती है। पृथ्वी के समान क्षमाशील होती है। – ऐसी छह गुणों से सम्पन्न पत्नी का मिलना सुलभ नहीं है; पर उपर्युक्त सभी गुण समता में कूट–कूट कर भरे हैं।''

(क्रमशः)

सर्वोदय अहिंसा अभियान संचालित करें

वीर निर्वाण महोत्सव के पावन अवसर पर पटाखों से होने वाली जन–धन हानि के प्रति लोगों को जागरूक करने और अपने कर्तव्यों का स्मरण दिलाने हेतु अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई के सहयोग से 'सर्वोदय अहिंसा अभियान' चलाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत पटाखों के नुकसान दर्शाने वाले रंगीन पोस्टर एवं हैंडबिल प्रकाशित कर संपूर्ण देश के जिनमंदिरों, तीर्थक्षेत्रों, विद्यालयों, सार्वजनिक संस्थाओं को भेजा जाएगा। साथ ही पोस्टर डिजाइन की सी.डी., आगजनी की घटनाओं को दर्शाती स्लाइड शो की सी.डी. भी तैयार है। आप भी अपने स्तर पर यह अभियान चलायें। एतदर्थ पोस्टर व हैंडबिल प्राप्त करने हेतु **संपर्क करें** – संजय शास्त्री, बी–180, ए–2, मंगलमार्ग, बापूनगर, जयपुर–302015 मोबा. 09785999100

(पृष्ठ 7 का शेष...)

'आत्मा' नहीं लिखा हो। वे यह सब तो जानते हैं कि आत्मा आनन्द का रसकंद है, ज्ञान का घनपिण्ड है, शक्तियों का संग्रहालय है। इतना सब जानने के बाद भी वे **'यह मैं हूँ' ऐसा नहीं जानते और यदि जानते हैं तो देहादिक या रागादिक के अंश को भी अपना जान लेते हैं, जिससे मिथ्यात्व बना ही रहता है।**

जिसे हम दृष्टि का विषय कहते हैं और उसे पर्याय से भी भिन्न कहते हैं; **यहाँ पर्याय का अर्थ यह है कि जो–जो पर्यायार्थिकनय का विषय है, वह पर्याय है।**

न तो हम हिन्दू को भारतीय कह सकते हैं और न मुसलमान को, न जैन को, न बौद्ध को और न स्त्री को, न पुरुष को और न बच्चों को, न जवान को; क्योंकि ऐसा भी हो सकता है कि कोई हिन्दू, मुसलमान अमेरिकी नागारिक हो। पर जो भारतवर्ष का नागरिक है, वह नियम से भारतीय है; उसीप्रकार जो पर्यायार्थिकनय का विषय है, वह नियम से पर्याय है।

प्रश्न – आप ऐसा कहते हो कि हम अपनी आत्मा को हर समय जान रहे हैं; लेकिन ऐसा भी तो कहा जाता है कि –

जाना नहीं निज आत्मा, ज्ञानी हुए तो क्या हुए।
ध्याया नहीं निज आत्मा, ध्यानी हुए तो क्या हुए।।

'आबाल–गोपाल को अनुभूतिस्वरूप भगवान आत्मा अनुभव में आ रहा है।' आपके इस कथन से क्या आगम के उन कथनों को तिलांजलि नहीं देनी होगी; जिनमें यह कहा गया है कि अनादि मिथ्यादृष्टियों ने आजतक आत्मा को जाना ही नहीं है।

उत्तर – अरे भाई ! घबड़ाने की जरूरत नहीं है, किसी को तिलांजलि नहीं देनी पड़ेगी। हमें अपने अज्ञान को ही तिलांजलि देनी होगी।

जहाँ ऐसा कहा है कि 'अनादिकाल से अपनी आत्मा को नहीं जाना', वहाँ ऐसा अर्थ करना कि **'यह मैं हूँ' – ऐसा नहीं जाना, उसका नाम अपनी आत्मा को नहीं जानना है और जहाँ अनादिकाल से अपनी आत्मा को जानने की बात कही हो, वहाँ यह समझना कि आबाल–गोपाल सभी को भगवान आत्मा जानने में आ रहा है; इसलिए हम भी भगवान आत्मा को निरन्तर जान रहे हैं।** ●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

जैन तिथि दर्पण

जैन तिथि दर्पण

दृष्टि का विषय

4 प्रथम प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

असली परेशानी तो यह है कि जानने में एक परमाणु पदार्थ नहीं आ रहा है, अनेक अर्थात् बहुत जानने में आ रहे हैं। इसीप्रकार देह से मिला हुआ आत्मा तो जानने में आ रहा है; लेकिन भिन्न आत्मा जानने में नहीं आ रहा है।

हम लोग जो ये कहते हैं कि एक समय में एक को ही जानेगा, दो को नहीं जानेगा – यह कथन तो बहुत स्थूल है। यह कथन तो उनके लिए करते हैं, जो दुनिया के सभी काम एक साथ ही करना चाहते हों। उनके लिए ही ऐसा कथन करते हैं कि दस काम एक साथ नहीं होंगे, किन्तु जो एक काम में दस काम होते हैं, वो तो एक साथ ही होते हैं। जैसे – रोटी बनाना, यद्यपि एक काम है, तथापि इसमें रोटी बेलना, तवे पर रखना आदि अनेक काम भी एक साथ होते ही हैं। लेकिन यदि कोई प्रवचन भी सुनना चाहे और रोटी भी पकाना चाहे तो ऐसे ये दो काम एक साथ नहीं हो सकते। इसीप्रकार लोग यह भी कहने लगे हैं कि दो पदार्थ एक साथ जानने में नहीं आते; किन्तु ऐसा नहीं है। अनेक पदार्थों को एक साथ जानना तो आत्मा का स्वभाव है।

स्वामीजी ने भी कहा है कि स्व–परप्रकाशक स्वभाव का अर्थ यह है कि स्व और पर दोनों एक साथ जानने में आते हैं और यह स्वभाव एक समय के लिए भी अस्त नहीं होता है। यहाँ तक कि निगोदिया जीव को भी स्व और पर – दोनों एक साथ जानने में आ रहे हैं।

निगोदिया जीव को 'पर्याय' नाम का सबसे अल्प ज्ञान होता है और वह निरावरण होता है अर्थात् उस पर किसी कर्म का आवरण नहीं होता। एक अक्षर के अनन्तवें भाग ज्ञान होता है। ऐसे अल्प ज्ञान के धारी निगोदिया जीव को भी स्व और पर दोनों जानने में आ रहे हैं।

ज्ञानी को तो स्व–परप्रकाशक स्वभाव प्रगट हो गया है, लेकिन अज्ञानी को वह प्रगट नहीं हुआ है; तब भी उस अज्ञानी को स्व व पर दोनों जानने में आ रहे हैं।

समयसार की १७–१८वीं गाथा में भी कहा कि आबाल–गोपाल सभी को भगवान आत्मा जानने में आ रहा है।

अरे भाई ! उसे 'अज्ञानी' कहने का कारण मात्र इतना ही है कि – वह 'यह मैं हूँ' – ऐसा नहीं जानता और इसीलिए उसे सम्यग्ज्ञान नहीं होता। अनुभूतिस्वरूप भगवान आत्मा के अनुभव में आने पर भी आत्मज्ञान उदित नहीं होने का कारण मात्र अपने भगवान आत्मा में 'यह मैं हूँ' – ऐसा ज्ञान उदित नहीं होना है और इसीलिए उसे अज्ञानी कहते हैं।

यहाँ कोई प्रश्न करे कि 'यह मैं हूँ' यह तो श्रद्धागुण की बात है।

अरे भाई ! यह श्रद्धा की ही नहीं, ज्ञानगुण में भी ऐसा ही है। जब ज्ञान, आत्मा को 'यह मैं हूँ' ऐसा जाने, तब सम्यग्ज्ञान का उदय होता है।

समयसार की १८वीं गाथा में कहा कि आबाल–गोपाल सभी को भगवान आत्मा अनुभव में आ रहा है; लेकिन उनको **'यह मैं हूँ'** – ऐसा सम्यग्ज्ञान उदित नहीं हुआ है। आत्मा के अनुभव में न आने की तो कोई समस्या ही नहीं है।

यदि लाईट (बिजली) न होने की समस्या हो तो उसके लिए दो बातें हो सकती हैं। एक तो यह कि लाईट की फिटिंग ही न हो; लाईट का कनेक्शन सरकार ने दिया ही न हो। दूसरी बात यह भी हो सकती है कि सरकार ने कनेक्शन भी दिया हो और पूरी लाईन भी हो; लेकिन एक आड़े बाल के बराबर तार अलग–अलग हो गये हों, बस उनको जोड़ना है; यह एक समस्या है। इस दूसरी समस्या में बस एक फ्यूज की बात है, वह फ्यूज जुड़ गया तो पूरे घर में लाईट आ जायेगी।

उसीप्रकार अनुभूतिस्वरूप भगवान आत्मा भी है और वह निरन्तर अनुभव में भी आ रहा है।

यह तो समस्या ही नहीं है कि सामग्री नहीं है अर्थात् गुरु नहीं है या देव नहीं है; क्योंकि कर्ता के अनुसार कर्म होता है और कर्त्ता–कर्म तो अनन्य होते हैं। यदि गुरु से, शास्त्र से या भगवान की दिव्यध्वनि से ज्ञान हो तो कर्त्ता अन्य हो जाये और कर्म अन्य हो जाये।

अरे भाई ! **ज्ञानगुण में से ज्ञान आता है और श्रद्धागुण में से श्रद्धान। अनादिकाल से अनुभूतिस्वरूप भगवान आत्मा का ज्ञान तो है ही; यदि उस आत्मा में 'यह मैं हूँ' – ऐसा अपनापन स्थापित हो जाये और जबतक 'यह मैं हूँ' – ऐसा अपनापन रहे, तबतक अनुभव भी कायम रहेगा।**

''भगवान आत्मा नित्य अनुभव में आ रहा है'' – इस कथन को इस घटना से भलीभाँति समझ सकते हैं कि कलकत्ता शहर में शरदचंद्र चट्टोपाध्याय जैसे एक बंगाली उपन्यासकार रहते थे। वे

एक अच्छे लेखक थे। वे मकान की तीसरी मंजिल पर रहते थे।

प्रकाशक बहुत होशियार होते हैं, ये लेखक का मात्र नाम ही लिखते हैं; उसका पता नहीं लिखते तथा लेखक से कहेंगे कि यदि आपका पता लिखा तो लोग आपसे मिलने आयेंगे और आप परेशान हो जायेंगे, इसलिए हम ऐसा कर रहे हैं। कभी–कभी तो प्रकाशक लोग लेखक का नाम ही बदल कर दूसरे नाम से उपन्यास प्रकाशित करते हैं। इसप्रकार दूसरे के नाम से सैंकड़ों किताबें छपती रहती हैं।

ऐसा ही उस लेखक के साथ हुआ कि उसके उपन्यास भी अन्य नाम से प्रकाशित होते रहे।

उसी मकान में पाँचवीं मंजिल पर एक आदमी रहता था, जिससे प्रकाशक उस लेखक की किताबों का अनुवाद कराते थे; लेकिन उस लेखक को यह मालूम नहीं है कि मेरी किताबों का यह अनुवादक है और उस अनुवादक को भी यह पता नहीं कि मैं जिस लेखक की किताबों का अनुवाद करता हूँ, वह लेखक यहीं, इसी मकान में रहते हैं।

लेखक और अनुवादक दोनों विक्टोरिया गार्डन में सुबह घूमने के लिए जाते थे, वहाँ एक–दूसरे से मिलते और परस्पर नमस्ते भी करते थे। लेखकों की आदत अधिक बात करने की नहीं होती है; इसलिए वे एक–दूसरे से अधिक घुले–मिले नहीं। इसप्रकार बीस वर्ष गुजर गये।

घूमते समय एक दिन जोर की बारिश आयी और वे दोनों पाँच–दस मिनिट के लिए एक साथ एक वृक्ष के नीचे खड़े हो गये। तब उन्होंने एक–दूसरे से परिचय किया और पता चला कि यह मेरी किताबों के अनुवादक हैं और यह लेखक। इसप्रकार बीस साल बाद उन्हें पता चला। जब उन्होंने आपस में एक–दूसरे को जाना होगा, तब गले मिले होंगे कि नहीं ? उनके अन्दर आनन्द की कणिका जगी होगी कि नहीं ?

अब मेरा यह प्रश्न है कि वे पहले एक–दूसरे को जानते थे कि नहीं ?

अरे भाई ! वे दोनों सबकुछ जानते थे, लेकिन वे दोनों यह नहीं जानते थे कि यही वह आदमी है अर्थात् लेखक यह नहीं जानता था कि यह मेरी किताबों का अनुवादक है और अनुवादक यह नहीं जानता था कि यह वही लेखक है, जिसकी किताबों का मैं अनुवाद करता हूँ। उन दोनों के बीच में बस इतनी सी दूरी थी।

उसीप्रकार भगवान आत्मा चौबीसों घंटे हमारे जानने में आ रहा है, लेकिन हमें यह पता नहीं है कि 'यह ही मैं हूँ' बस हमारा इतना सा अज्ञान है।

किसी व्यक्ति की २० या २२ वर्ष की सुन्दर लड़की हो और उसके पड़ौसी मित्र का २५ साल का जवान लड़का हो। दोनों आपस में मिलते–जुलते हैं और एक–दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं। लड़का भी लड़की के पिता के पैर छूता है और वह व्यक्ति उस लड़के को आशीर्वाद भी देता है, लेकिन उस व्यक्ति को कभी ऐसा विकल्प भी नहीं आता है कि मेरी लड़की का संबंध इस लड़के से भी हो सकता है।

जब वह व्यक्ति किसी पण्डितजी से अच्छा सा लड़का बताने के लिए कहते हैं कि ऐसा लड़का बताओ जो अच्छा हो, पढ़ा–लिखा हो; तब वे पण्डितजी कहते हैं कि तुम्हारे बगल में जो पड़ौसी का लड़का है, वह कैसा रहेगा ?

तो वह व्यक्ति कहता है – यह तो मैंने सोचा ही नहीं था और वे अपने पड़ौसी मित्र के यहाँ गए और कहा कि हमने अपनी लड़की के लिए बहुत से लड़के देखे; लेकिन अच्छा लड़का कोई मिला ही नहीं।

भाईसाहब ! क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि मेरी लड़की का संबंध आपके लड़के से हो जाये ?

पड़ौसी मित्र बोले – ''क्यों नहीं हो सकता है ? लेकिन यह बात मैं पहले कैसे कहता ? विकल्प तो मुझे भी बहुत दिनों से है।''

उस व्यक्ति के द्वारा उस लड़के को कल तक के जानने–पहिचानने में और आज के जानने–पहिचानने में कोई अंतर हो गया कि नहीं ? उसमें अपनापन जागृत हो जायेगा कि नहीं ?

अरे भाई ! भगवान के ज्ञान में तो ये पहले से ही था। प्रकृति ने भी उन पति–पत्नी को पड़ौस में ही पैदा किया था, यह तो उस व्यक्ति का अज्ञान था कि उसको कभी ऐसा विकल्प ही नहीं आया। अज्ञान ऐसा नहीं था कि वह पड़ौस के बच्चे को जानता ही नहीं था; लेकिन उसे इस रूप में जानने के बाद उस लड़के से अपनापन जागृत होगा कि नहीं ?

उसीप्रकार अनुभूतिस्वरूप भगवान आत्मा को जानने के बाद भी जबतक यह ऐसा नहीं जानेगा कि 'यह मैं हूँ' तबतक आनन्द की कणिका नहीं जगेगी।

इसीलिए तो यह कहा जाता है कि ११ अंग और ९ पूर्व के पाठी होने पर भी आत्मा को नहीं जाना। अरे भाई ! वे आत्मा को तो जानते हैं; क्योंकि ऐसा तो हो ही नहीं सकता कि ग्यारह अंग में

(शेष पृष्ठ 3 पर ...)

2 अक्टूबर 2014, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. PC / FN-32 / 2012-14

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्‌गार –

● **चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागरजी महाराज** के हृदय में श्री कानजीस्वामी के प्रति जो विचार थे, वे 'आचार्य शांतिसागर अभिनन्दन ग्रन्थ' (पृष्ठ 157) में इस प्रकार दिये हैं –

एक बार कुछ व्यक्ति आचार्यश्री के पास जाकर बोले – महाराज! समाज में कानजीस्वामी के आत्मधर्म ने गजब मचाया है। उनकी समयसार की एकान्तिक प्ररूपणा से बड़ी गड़बड़ी होगी, व्यवहार धर्म का व सच्चे धर्म का लोप होगा....। इसलिए आप आदेश निकालें व उनकी प्ररूपणा धर्मबाह्य है, ऐसा जाहिर करें। उक्त कथन सुनकर आचार्यश्री ने कहा – **''अगर मेरे सामने प्रवचन के लिए समयसार रखा जाएगा तो मैं भी क्या, और कोई भी क्या, वही तो मुझे कहना पड़ेगा। पुण्य-पाप को हेय ही बताना होगा, यही समयसार की विशेषता है, उनका निषेध करने से क्या होगा ? कानजी का निषेध करके क्या कुन्दकुन्द का निषेध करना है ?''**

● **मुनिराज श्री सिद्धसागरजी महाराज** ने अपने विचार इसप्रकार व्यक्त किये हैं –

''इस युग में श्री कानजीस्वामी ने आचार्य कुन्दकुन्द के आगम का अत्यधिक प्रचार व प्रसार किया है। गुजरात में जहाँ एक भी दिगम्बर जैन नहीं था वहाँ आज उनके प्रभाव से लाखों दिगम्बर जैन हो गये हैं। स्वामीजी की प्रेरणा से अनेक गगनचुम्बी दिगम्बर जैन मन्दिरों का निर्माण हुआ है तथा लाखों की संख्या में वीतरागी सत्साहित्य का प्रकाशन किया जा चुका है। श्री कानजीस्वामी द्वारा अभूतपूर्व धर्म-प्रभावना हो रही है।[1]''

● जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश के निर्माता **प्रशान्तमूर्ति तत्त्वरसिक क्षुल्लक श्री जिनेन्द्रजी वर्णी** के श्री कानजीस्वामी के प्रति उद्‌गार पढिये –

''अत्यन्त परोक्ष उस तत्त्व का परिचय पाने के लिए जिनवाणी की शरण अथवा ज्ञानीजनों की संगति ही मात्र निमित्त कारण है। अत्यंत दुर्लभ उस सार की प्राप्ति में निमित्तरूप से सहायक होने वाले उस ज्ञानी पुरुष के प्रति क्यों स्वाभाविक बहुमान स्वत: उत्पन्न न हो जायेगा ? भले ही वह ज्ञानी पुरुष-विशेष साक्षात् वीतरागी भगवान अरहंत हों या वीतरागी दिगम्बर गुरु हों या कोई श्रावक हों अथवा गृहस्थ हों, तत्त्व की प्राप्ति में निमित्तपने की अपेक्षा सब समान हैं। यद्यपि वैराग्य व चारित्र की भूमिकाओं की अपेक्षा उनमें आकाश-पाताल का अन्तर है।

काठियावाड़ देशस्थ सोनगढ ग्राम के सुप्रसिद्ध अध्यात्म-योगी कानजीस्वामी भी उन्हीं में से एक हैं। अध्यात्म जगत के वासी उनके अर्थात् श्री कानजीस्वामी के उस महत् उपकार को कदापि नहीं भुला सकते जो कि उन्होंने अपनी अद्वितीय प्रतिभा द्वारा भौतिक युग की अन्धकारमय जगती पर विलुप्तप्राय: हो जाने वाली अध्यात्मधारा को पुन: नवजीवन प्रदान किया है।[2]''

1. आत्मधर्म, फरवरी 1977, पृष्ठ 32
2. सन्मति संदेश, वर्ष 7, अंक 5, पृष्ठ 27

नि:शुल्क पुस्तक प्राप्त करें

श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक डॉ. दीपक जैन 'वैद्यरत्न' द्वारा लिखित **'वर्तमान में जीवदया पालन'** का प्रकाशन 15 अगस्त को हुआ है। इस पुस्तक में आधुनिक जीवनशैली में श्रावकाचार का पालन किस तरह हो सकता है ? इसका आगम संगत अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक का मूल्य 10 रुपये है, तथापि सभी त्यागी व्रतियों एवं मंदिरों हेतु नि:शुल्क भेंट की जा रही है। **संपर्क करें –** डॉ. दीपक जैन, सी-115, सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर-15 मोबा. 09352990108

आवश्यकता

धार्मिक कक्षाओं में अध्यापन हेतु एक पूर्णकालिक शास्त्री विद्वान की। मासिक वेतन 35,000 से 50,000 रुपये। **संपर्क सूत्र –** अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, निर्देशक, जैन अध्यात्म स्टडी प्रोग्राम, सीमंधर जिनालय, कालबा देवी रोड़, मुम्बई फोन - 9821016988

प्रकाशन तिथि : 28 सितम्बर 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127